आंतर - भारती

हिन्दी मासिक पत्रिका

''आंतर भारती'' स्वप्नद्रष्टा
साने गुरुजी

संस्थाध्यक्ष
ॲड.आनंदमोहन माथुर

प्रेरक, संवर्द्धक-संपादक
स्व.यदुनाथ थत्ते

प्रबंध संपादन कार्यालय
आंतर भारती
साने गुरुजी मार्ग,
औराद शहाजानी - 413 522 (महा.)
ईमेल-antarbharati.patrika@gmail.com

संपादन कार्यालय
द्वारा, डॉ.सी.जय शंकर बाबु
सहायक प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग, पांडीच्चेरी -
विश्वविद्यालय, कालापेट, पुदुच्चेरी - 605014
ईमेल-editorbabuji@gmail.com

आंतर भारती, साने गुरुजी का एक स्वप्न जो असीम युवा शक्ति की सृजनात्मक उपयोगिता हेतु समर्पित, युवाओं की सम्भाव्यता, प्रवीणता, प्रेरणा व विश्वास के नए आयाम प्रदान करती है.

मुख्य संपादक
प्राचार्य सदाविजय आर्य
09823156777

visit us : antarbharati.org.in

कार्यकारी संपादक
डॉ.सी.जयशंकर बाबु
09843508506

संपादक
गंगाधर घुमाडे • ज्योतिराव लढ़के

मार्गदर्शक
एस.एन.सुब्बाराव • मुकुंद कुलकर्णी • मुरलीधर शहा

सहयोगी
मधुश्री आर्य •गोपाल सत्पुरे
सभी छायाचित्र - सदाविजय आर्य

प्रकाशित सामग्री से प्रकाशक / संपादक सहमत ही हैं ऐसा न मानें

ANTAR BHARATI : A dream of Sane Guruji committed to the constructive utilization of boundless Youth Power, gives new dimensions to the Potentiality, Skill, Inspiration & Belief of the youth.

आंतर भारती (मासिक) पत्रिका मुद्रक, प्रकाशक सदाविजय आर्य द्वारा **साईराम ग्राफीक्स**, लातूर से गणेश ऑफसेट, उदगीर हेतु मुद्रित कर आंतर भारती संकुल, औराद शहाजानी से प्रकाशित.

इस अंक में...

संपादकीय -	बेघर इन्सानों की अंतहीन यातनाएं...	५
आंतर भारती - १	तुका म्हणे	८
आंतर भारती - २	बसव वचन	१०
आंतर भारती - ३	तिरुवल्लुवर वाणी	११
काव्य भारती - १	पर्यटन केंद्र एवं तीर्थस्थल	१२
विशेष आलेख - १	वृद्धावस्था पेंशन-एक मानवीय उत्तरदायित्व	१३
विशेष आलेख - २	युवा शक्ति और राष्ट्रीय एकता	१५
समाचार भारती-१	गांधी, निशस्त्रीकरण, एवं विकास सम्मेलन इंदौर	१६
विशेष आलेख - ३	'सम्पूर्ण मानव जगत् की एकता' ही इस युग की सबसे बड़ी आवश्यकता है!	२८
समाचार भारती-२	प्रसिद्ध लेखक श्री एन्.सुहासजी स्वामी विवेकानंद पुरस्कार से सन्मानीत	३१
सूचना भारती-२	पू.साने गुरुजी लिखित, अनुवादित संकलित साहित्य सूचित (मराठी) भारतीय भाषाओं में अनुवाद की स्वैच्छिक सेवा प्रदाताओं की आवश्यकता है	३२

हमारा ई-मेल का पता

e-mail : antarbharati.patrika@gmail.com
raavas@rediffmail.com
लेख इस ई-मेल पर भी भेजे जा सकते हैं

आंतर भारती पत्रिका के ग्राहक बने / बनाएँ

संपादकीय...

बेघर इन्सानों की अंतहीन यातनाएं...

भारतीय नागरिकों को संविधान द्वारा प्रदत्त मूल अधिकारों में एक जीने का अधिकार' भी शामिल है जो संविधान के अनुच्छेद २१ में इस रूप में उल्लिखित है - प्राण और दैहिक स्वतंत्रता का संरक्षण - किसी व्यक्ति को उसके प्राण या दैहिक स्वतंत्रता से विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया के अनुसार ही वंचित किया जाएगा, अन्यथा नहीं.

इस अधिकार के संरक्षण में शासकीय पक्ष द्वारा दायित्व की पूर्ति के क्रम में कई व्यावहारिक पहलू इसमें जुड़ने की आवश्यकता है. कई दृष्टियों से ऐसे कई आयाम आज भी उपेक्षित हैं या उनकी ओर अपेक्षित मात्रा में ध्यान नहीं दिया जा रहा है. संविधान के लागू होने के ६४ वर्षों के बाद भी सभी नागरिकों के लिए जीने के अधिकार की सही मायने में गारंटी या सुरक्षा सुनिश्चित नहीं हो पा रही है. आज भी देश की आबादी में लगभग ८ करोड़ इन्सान बेघर हैं. अनुसंधानकर्ताओं के बयानों के मुताबिक यह संख्या बढ़ती ही जा रही है. इन आश्रयविहीन लोगों को प्रकृति प्रकोप, मौसम की अननुकूल परिस्थितियों और मानवीय भूलों व जानबूझकर किए जा रहे अत्याचारों, दुर्व्यवस्था, अधिकारों का अनुचित प्रयोग आदि की वजह से आज भी कई यातनाएं झेलनी पड़ रही हैं. इन यातनाओं से पीड़ितों को राहत दिलाने के प्रयासों में आखिर न्यायालयों को आवाज़ उठानी पड़ी है. न्यायिक आदेशों का परवाह कहीं कागजी कार्रवाई के रूप में ही सही हो पाया है. अधिकांश महानगरों व लगभग सभी राज्यों व केंद्रशासित प्रदेशों के प्रमुख शहरों में बेघर इन्सानों को बसाने के लिए न कोई सही व्यवस्था हो पाई है, न ही इस ओर अपेक्षित ध्यान दिया जा रहा है. यह कोई मेरी व्यक्तिगत टिप्पणी नहीं है, मगर उच्चतम न्यायालय के आयुक्तों द्वारा माननीय न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत रिपोर्टों की विस्पष्ट घोषणा भी इसीसे मिलती-जुलती है.

लोग बेघर क्यों हो रहे हैं, यह सबसे बड़ा सवाल है. दुनिया में सबसे ज़्यादा आबादी वाले देशों का दर्जा प्राप्त करने की दौड़ में अग्रसर भारत की बड़ी आबादी ही इसका पहला कारण हो सकता है. शासन का यह कर्तव्य है कि संविधान के मूल्यों के अनुसार लोगों को अपने अधिकारों की गारंटी व सुरक्षा के लिए अपेक्षित कदम उठाएं. मगर कई संदर्भों में इसे गैर-प्रमुख समस्या या मुद्दे के रूप में बड़ी उपेक्षा की दृष्टि से देखते रह जाने की वहज से आज भी आए दिन अखबारों के क्षेत्रीय समाचार के पन्नों में किसी न किसी कोने में यह जरूर पढ़ने को मिल जाता रहता है कि अमुख जगह एक बेपहचान की मौत हो गई है...

लाश बरामद हुई... आदि. ऐसे दयनीय मृत्यु की चपेट में आनेवाले अधिकांश इन्सान बेघर समुदाय से ही होते हैं. लोग अक्सर आर्थिक, पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक व अन्य कारणों से बेघर हो जाते हैं. उन्हें न केवल रहने की समस्या होती है मगर अननुकूल मौसम के असहनीय ताप-शीत जैसी स्थितियों से बदन को बचाने के उपायों के अभाव की एक बड़ी समस्या होती है. रोटी, कपड़ा और मकान जैसी जरूरतों में पहले दो अर्थात रोटी और कपड़ों के लिए भी तरसने की स्थिति आज भी कई इन्सानो के समक्ष है. कुछ लोग तो भीख मांगकर पेट भरने की कोशिश कर लेते हैं, कई तो अपने खून व पसीने को एक कर मेहनत करके मुश्किल से कमाए हुए चार कौड़ियों से पौष्टिक व स्वच्छ भोजन की तकदीर भी नहीं पाते हैं. ऐसे में गंदे मैले कपड़ों से ही बदन को ढ़कने के लिए मजबूर हो जाते हैं. ऐसी दयनीय परिस्थितियों में अपने बदन को ज़िंदा रखनेवाले इन्सान को मकान की तकदीर कहाँ प्राप्त हो सकती है और कैसे हो सकता है ? बेघर होने वालों में बच्चे, बड़े, बूढ़े, महिलाएं, रोगी, निरोगी, मानसिक-शारीरिक विकलांग आदि हर कोई शामिल हैं. उनकी यातनाएँ अंतहीन हैं. उन यातनाओं के इतने कई पहलू हैं, उन सबकी चर्चा चंद पंक्तियों में संभव नहीं है. उनकी तमाम समस्याओं का चिट्ठा महाभारत से भी बड़ा काव्य बन सकता है.

कारण जितने भी हो, इन्सान का बेघर हो जाना और वह स्थिति कई दृष्टियों से उसके लिए जानलेवा साबित हो जाना निश्चय ही दयनीय है. क्योंकि उनकी मृत्यु का पाश न केवल प्रकृति के हाथ से उनके गले में लग जाता है, मगर समाज व व्यवस्था के निर्मम दुष्कृत्यों के रूप में भी उसके तकदीर का फंदा बन जाता है. मुंबई, चेन्नई, कोलकत्ता जैसे महानगरों के सड़कों पर सोनेवाले लोगों पर लापरवाही से गाड़ी चलाकर निरपराध व्यक्तियों की जानें लेने की खबरें अक्सर हम पढ़ चुके हैं. दिल्ली व उत्तर भारत के कई शहरों में कडाके की ठंड की चपेट में आनेवाले असहाय प्राणियों की मौतों की गिनती हम अख़बारों के पन्नों में गौर करते रहते हैं. ऐसे आंकडों की कोई अधिकारिक पुष्टि नहीं होती है, क्योंकि इन आंकड़ों को समेकित करने का बीड़ा कौन उठाएं... ऐसी ज़रूरत तभी पड़ती है जब अखबारों के पन्नों में रिपोर्ट छप जाए और अदालतों के आदेश के रूप में गाज गिर पड़े, तभी जाकर खंडन, विखंडन, खानापूर्ति के बहाने कुछ आंकड़ें, खंडित, विखंडित तथ्य सामने आ जाते हैं. न्यायालय के आदेश पर आयुक्तों की रिपोर्टों से एक दूसरा ही दृश्य उपस्थित हो जाता है. अखबारों के पन्नों, टी.वी. चैनलों के पर्दों पर जो भी दृश्य चित्र हमारे सामने से गुज़र जाएंगे, वे सब कई निष्ठुर सच्चाई के बयानों के रूप में संवेदनशील हृदय के लिए दुःख की खबरें लगती

हैं. विवेकशील इन्सानों को सोचने के लिए प्रेरित करती हैं.

बेघर इन्सानों की समस्याओं के तमाम आयामों का खुलासा हल पल हमारे सामने अखबार व टी.वी. चैनल में पीड़ितों की आवाजों के माध्यम से होता रहता है, मगर मनोरंजन की दुनिया में तृप्ति पाने की दिमागी लालसा से हमारी उंगलियाँ अनायास ही निर्मम रिमोट के सहारे दृश्यों को पलट देती हैं. लगता है समाज में इस समस्या की चेतना जितनी कम है या इसके प्रति विमुखता है, वहीं दूसरी ओर व्यवस्था में भी इस समुदाय के प्रति इतनी ही कठोर निर्ममता है या अमानवीय रवैये हैं. ऐसे में छपे ख़बरों के आधार पर उधर मानव अधिकार आयोग नोटिसों का जारी होने का सिलसिला शुरू हो जाना भी खबर बन जाता है. तब फिर से कहीं थोड़ी-सी आहट शुरू होकर घोषणाएँ शुरू हो जाती हैं. आश्वासन भर दिए जाते हैं कि एक साल में या दो साल में बेघरों के लिए घर सुनिश्चित हो जाएंगे.. उनकी सुरक्षा के उपाय अपनाये जाएंगे... आदि. अक्सर जिम्मेदार वर्ग की वाणी में बेघर लोगों के प्रति टिप्पणी अपराधी', आलसी', गंदे', असभ्य' आदि की उपाधियों से अलंकृत होती नज़र आती हैं तो उधर पीड़ितों की गद्गद वाणी में गैर-जिम्मेदार', निर्मम', गैर-मददगार रवैये' के ख़िताबों से व्यवस्था को नवाजती सुनाई पड़ती है. एक दूसरे से टकराने वाले कानूनी प्रावधान भी इन तमाम समस्याओं में अपनी जगह सुरक्षित महसूस करते हैं, जो बड़ी विडंबना है.

कई संदर्भों में खुला आसमान ही इन निरीह इन्सानों का मकान साबित हो जाता है. खुला आसमान हर समय आह्लादजनक नहीं होता, उसके कई छेद नज़र आने लगते हैं कभी तेज धूप, कभी कडाके की ठंड, कभी बाढ़ या तेज बारिश आदि आफतों के रूप में बेघर इन्सानों को सताने लगते हैं. कई संदर्भों में निर्मम नागरिकों के विभिन्न सरीके के रवैयों के रूप में भी इन पर गाज गिर पड़ती रहती है. इस जटिल समस्या को जिम्मेदार वर्ग एक गौण समस्या के रूप में ही देखते हैं. कानून-व्यवस्था के नाम से दमन के शिकंजे और होते हैं इनके पास. ऐसी लापरवाही के बीच कोई आदेश उन्हें बाध्य भी करता है तो तब जल्दबाजी में कुछ व्यवस्था करके पुनः उस ओर ध्यान न देने से अधिकांश संदर्भ उस ओर अपेक्षित ध्यान न देने से ऐसे रैन बसेरे बेघर इन्सानों के लिए पहुँच से दूर रह जाते हैं. लापरवाही के साथ जो भी खानापूर्ति की जाती है वह यदि बेघर इन्सानों के लिए दमघोंट, औसत सुविधाओं से वंचित, सामान्य सुरक्षा से भी वंचित रैन बसेरा साबित हो जाए, इसमें ऐसे आश्रयों से विमुख हो जाने वाले बेघर इन्सानों का कसूर क्या हो सकता है ? इस पर समाज में गंभीर चिंतन व कर्मठ करणीयता

(पृष्ठ ९ पर...)

तुकाम्हणे

(मराठी)

ज्ञानियांचा गुरु राजा महाराव

ज्ञानियांचा गुरु राजा महाराव । म्हणती ज्ञानदेव ऐसें तुम्हां ।।धृ।।
मज पामरा हें काय थोरपण । पायींची वाहाण पायीं बरी ।।१।।
ब्रह्मांदिक जेथें तुम्हां वोळगणे । इतर तुळणें काय पुरे ।।२।।
तुका म्हणे बेणे युक्तीची ते खोली । म्हणोनि ठेविली पायीं डोई ।।३।।

हिन्दी भावानुवाद :

'श्री ज्ञानदेव ज्ञानराज हैं'

आप ज्ञानियों के राजा हैं, ज्ञानीजन के गुरु महाराजा ।
इसीलिए संत कहते हैं 'ज्ञानदेव' हैं ज्ञान के राजा ।।१।।
मैं हूँ पामर, मुझ पापी का कैसा बडप्पन, कैसी महती ।
पाँव में पहनी जाती जूती, पाँव में ही है वह फबती ।।२।।
ब्रह्मा आदि देवता भी जब आश्रय पाते हैं आपका ।
किसी अन्य की उपमा क्या दूँ, कौन कहाँ उपमान आपका ।।३।।
तुका कहे गहराई ज्ञान की, कैसे नापूँ, गाऊँ गाथा ।
ना कोई कला, रीत ना जानूँ, चरणों में रख दिया है माथा ।।४।।

हिन्दी : प्राचार्य वेदकुमार वेदालंकार
परिमल २८/८१, विद्यानगर, उस्मानाबाद (महा.).

English Translation

You are known as God of Knowledge

Gyaniyaacha raajaa guru mahaaraawa

You are known as Gyanadeva1.
God of Knowledge;
You are the king among scholar-Saints.

You have given me a place of honour

Out of your love for me
But then I know my place,
Just as shoes are meant only to adorn the feet

You are in the company of gods
And how can anyone evaluate You?
Says TUKA, I am devoid of any knowledge.
I bow down to You by placing my head on Your sacred feet.

---

1. - Gyanadeva - Santa Gyaneshwar.

English : D.S.VAJRAM
3, Praram, Lakaki Rasta, Pune - 411016

(पृष्ठ ७ से...)

की अपेक्षा है. लापरवाह जिम्मेदार वर्ग के लिए निराश्रय इन्सानों की गतिकी ही अजीब व असहज लगने लगती है. बेघर लोगों की न कोई पहचान होती है, न राशन कार्ड, न ही आधार कार्ड. समाज व व्यवस्था से निरादर के तकदीर इन्सानों को आधार कहाँ ? यह आजाद भारत में लंबे समय से असहनीय उपेक्षा की एक गंभीर समस्या है. इस पर जितनी गंभीरता से उच्चतम न्यायालय की वाणी आदेशों के रूप में निसृत हुई है, उतनी ही गंभीरता से तुरंत कार्रवाई शुरू हो जानी चाहिए. समस्या के लिए ठोस व स्थाई समाधान की दिशा में हमें बौद्धिक, मानसिक, भौतिक, नैतिक, संवेदनात्मक, सांस्कृतिक व सभ्यतापरक योगदान देने की जरूरत है.

आशा है, आंतर भारती' से जुड़े प्रत्येक सज्जन इस दिशा में अपेक्षित चेतना जगाकर निराधार लोगों को कोई आधार दिलाने की दिशा में कार्य शुरू कर देंगे. आश्रयविहीन इन्सानों को आश्रय का इंतजाम हम सबका दायित्व है. इस संबंध में जहाँ भी कर्मठ पहल हो रही है, उनसे संबंधित जानकारियों का आंतर भारती' में स्वागत है.

अंतर राष्ट्रीय महिला दिवस' की शुभकामनाओं सहित...

- डॉ. सी. जय शंकर बाबु

बसव वचन

मूल कन्नड वचन -
इवनारव इवनारव
इवनारवनेंदनिसिदिरय्या
इव नम्मव इव नम्मव
इव नम्मव नेंदेनिसिय्य
कुडल संगम देव निम्म
मनेय मगनेनिसय्य

हिंदी काव्यानुवाद :-

यह कौन है, यह कौन है
यह कौन है ऐसे मत बोल
यह हमारा, यह हमारा
यह हमारा, ऐसे बोल
कुडल संगम देव
मुझे अपना पुत्र बना लिजिए ।

भाष्य -

महारात्मा बसवेश्वरजी का यह अत्यंत प्रसिद्ध वचन है. जिसमें वे सबको अपना बनाने का संदेश देते हैं. अपने परायेपन का भाव संकुचितता को व्यक्त करता है. आप-पर भाव मनुष्य से मनुष्य को तोडता है. अपनत्व का भाव मनुष्य को मनुष्य से जोडता है. यह सब मेरे अपने हैं. विश्व को एक परिवार की तरह बनाता है. विश्व में कोई भी धर्म ऐसा नहीं, जो आपसी बैर-भाव को उकसाता हो. महात्मा बसवेश्वरजी के पश्चात महाराष्ट्र के संतकवि ज्ञानेश्वरजी ने अपने पसायदायन में इसी भाव की पुष्टि की है. उस विश्वात्मक देव से वे यही प्रार्थना करते हैं. जो जिसकी माँग करता है वह उसे प्राप्त हो जाए. आपसी बैर नष्ट हो जाए और सब सुख शांति से, भ्रातृत्व भाव से रहे.

- डॉ.इरेश सदाशिव स्वामी
- 'विद्या', १२, ब्रह्मचैतन्य नगर, बिजापूर रस्ता, सोलापुर - ४१३००४
०२१७-२३४२१९४, ०९३७१०९९५००

तिरुवल्लुवर वाणी

तिरुक्कुरल

तमिलमूल - संत तिरुवल्लुवर
देवनागरी लिप्यांतरण एवं हिंदी हाइकु
अनुवाद - डॉ.सी.जय शंकर बाबु

प्रथम खंड - अरत्तुपाल (धर्म खंड)
इल्लऱवियल् (गृहस्थ-धर्म)
अध्याय ५. इल्वाळ्क्कै (गृहस्थ-जीवन)

अऱनेनप् पट्टदे इल्वाळ्क्कै अह्दुम्
पिऱन्पळिप्पदु इल्लायिन् नन्ऱु । (कुरल - ४९)

श्रेष्ठ धर्म है

गृहस्थी ; अनिंद्य है

तो शोभनीय ।

भावार्थ - गृहस्थ जीवन ही श्रेष्ठ धर्म है । निंदारहित हो तो वह जीवन ही शोभनीय होता है ।

वैयत्तुळ् वाळ्वाङ्गु वाळ्ब्वन् वानुऱैयुम्
देय्वत्तुळ् वैक्कप् पडुम् । (कुरल - ५०)

नियमबद्ध

गृहस्थी ; देवतुल्य

पूजनीय भी ।

भावार्थ - धर्मबद्ध जीवन बितानेवाला गृहस्थ, स्वर्गवासी देवताओं से तुलनीय है और वह मनुष्यों में पूजनीय भी होता है ।

पर्यटन केंद्र एवं तीर्थस्थल

गोआ

- टी.ई.एस.राघवन

'गोआ' में झीलें, नदी, झरने हैं उद्यान ।
पर्यटकों को सिंधुतट, आकर्षन का स्थान ।।
विविध बीच हैं यहाँ के 'दोना' 'मीरामार'।
'कलंगूट' औ 'कोलंवा' अंजुना सिंधुपार ।।
नौकाएँ, मोटर बोट, निशिदिन हैं उपलब्ध ।
'गोमंतक' इसका नाम, सुविधा है उपलब्ध ।।
पुर्तगालियों का राज्य, यह अब भारत अंग ।
धूप स्नान करते यहाँ, 'हिप्पी' आधानंग ।।
'काल नगर' बागाटोर, 'बागा' समुद्रतीर ।
'कंडोलिम' 'पोलोलेम', ये हैं सागर तीर ।।
'कलंगूट को' सिंधु के, तट-रानी कहलाय ।
गोआ में इनके सिवा, कई तीर रह जाय
'पणजी' रूमानी पुर है चैत्यों की भरमार ।
गोआ में पुरतगाली चर्चों की भरमार ।।
'गोआपुर' के चर्च, सब शिल्प दृष्टि, बेजोड़ ।
चर्च घडी का निनाढ़ और रव से बेजोड़ ।।
मंगेश मंदिर में शिव, मूरति विराजमान ।
ऐतिहासिक किले यहाँ, भग्नशेष द्युतिमान ।।
संत जेवियर की ममी, दर्शन करने योग्य ।
गिरजाघर स्थापत्य से नयनों का उपभोग्य ।।

ओल्ड गोवा चर्च

मंगेश मंदिर

- १, हनुमंतरायन मंदिर गली, ट्रिप्लिकेन, चेन्नई - ६००००५.

विशेष आलेख - 9

वृद्धावस्था पेंशन-एक मानवीय उत्तरदायित्व

- भारत डोगरा

भारत में वृद्ध समुदाय की दारुण स्थिति अकल्पनीय है. पिछले दो दशकों के आर्थिक उदारीकरण से सामाजिक अन्याय कठोर से कठोरतम होते जा रहे हैं. बच्चों, स्त्रियों व वृद्धों की स्थिति में दिनोदिन गिरावट आ रही है. अभी जो वृद्धावस्था व अन्य सामाजिक पेंशन प्रचलन है उनमें प्रदत्त राषि नाकाफी है. आवश्यकता इस बात की है कि पेंशन से गरिमामय जीवन निर्वाह हो सके.

भाव से सर्वाधिक पीड़ित परिवार व व्यक्तियों के रूप में हमें वृद्ध व बहुत कमज़ोर नागरिकों से मिलवाया जाता है. पूछने पर पता चलता है कि इनके परिवारों के युवा सदस्य या तो प्रवासी मजदूर के रूप में बाहर गए हैं या वे स्वयं इतने निर्धन हैं कि अपने वृद्ध मां-बाप की उचित देखरेख नहीं कर पा रहे हैं. इस दारुण स्थिति से बचने का एक कारगर उपाय है कि पेंशन के माध्यम से वृद्ध नागरिकों की सामाजिक सुरक्षा को मजबूत किया जाए. यदि प्रत्येक वृद्ध नागरिक को प्रतिमाह लगभग २000 रुपए की पेंशन निश्चित तौर पर मिल जाए तो इससे देश के करोड़ों वृद्ध नागरिकों को बहुत राहत मिल सकती है. इसी मांग को लेकर पिछले दो वर्षों में पेंशन परिषद ने राष्ट्रव्यापी अभियान चलाया है. चाहे सत्ताधारी हों या विपक्ष, सभी यह कहते हैं कि पेंशन परिषद् की मांगें बहुत वाजिब हैं और जरूरी हैं. पर अभी इंतजार इस बात का है कि इसके लिए जरूरी संसाधन कब उपलब्ध करवाए जाएंगे.

देश के कई विख्यात सामाजिक कार्यकर्ताओं व जनसंगठनों ने मिलकर पेंशन परिषद को पेंशन सुधार का मुख्य मंच बनाया है. पेंशन परिवार के अनेक धरने-प्रदर्शनों व मांग-पत्रों के बाद प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह ने ग्रामीण विकास मंत्री को पेंशन सुधार की संभावनाएं तलाशने को कहा. जयराम रमेश द्वारा तैयार किए गए दस्तावेज में स्वीकार किया गया है कि पेंशन देने वाले केन्द्रीय सरकार के राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम में बहुत सुधार की जरूरत है.

पेंशन परिषद ने पेंशन सुधार के लिए मुख्य रूप से छः मांगे उठाई हैं. इसकी एक मुख्य मांग यह है कि इस समय जो न्यूनतम मजदूरी तय है, उससे आधी राशि को पेंशन देने का आधार बनाया जाए. और किसी भी हालत में कम से कम २000 रुपए प्रतिमाह की दर से पेंशन भुगतान किया जाए. बाद के वर्षों में जैसे-जैसे कीमतों में वृद्धि के साथ सरकारी कर्मचारियों को दी जाने वाली पेंशन में वृद्धि होगी, उसी अनुपात में इस पेंशन में भी वृद्धि की जाए.

पेंशन परिषद की यह मांग भी बहुत उचित मांग है कि गरीबी रेखा के ऊपर-नीचे के विवाद में पड़े बिना सभी वृद्ध नागरिकों को पेंशन दी जाए. इसके दायरे से केवल वे लोग बाहर रखे जाएंगे जिनके लिए पहले से इससे अधिक पेंशन तय है (जैसे कि सरकारी कर्मचारी है) या वे व्यक्ति जो वृद्धावस्था में भी आयकर के दायरे में आने जितनी धनराशि कमा रहे हैं. आगे सवाल यह भी है कि कितनी आयु के व्यक्ति को वृद्ध माना जाए. सरकार ६0 वर्ष व उससे अधिक आयु के लोगों को सामान्यतः पेंशन की दृष्टि से वृद्ध मानती है. पर पेंशन परिषद का मानना है कि कमजोर वर्ग के लोगों में वृद्धावस्था और पहले आरंभ होती है अतः ५0 से ५५ आयु वर्ग के बीच नागरिक को यह पेंशन उपलब्ध होनी चाहिए. यह मांगें बहुत न्यायसंगत हैं और सरकारी तंत्र भी यह स्वीकार कर रहा है. अब बहस संसाधनों की उपलब्धि पर आकर ठहर गई है. पेंशन परिषद ने इस बारे में भी कई विशेषज्ञों की राय प्रस्तुत की है कि संसाधन किस तरह जुटाए जा सकते हैं.

परिषद का मानना है कि पेंशन की इस नई व्यवस्था के लिए धनराशि नागरिकों से नहीं लेनी चाहिए अपितु इसकी धनराशि की व्यवस्था सरकार अन्य स्तरों पर कर सकती है. इस तरह से सभी जरूरतमंदों की पेंशन की व्यवस्था करने में अनेक गरीब व विकासशील देश जैसे बोलीविया, लेसोथो, नामीबिया, बोत्सवाना, दक्षिण अफ्रीका, केन्या व नेपाल पहले ही महत्वपूर्ण कदम उठा चुके हैं. इनमें से कुछ देशों की अपेक्षा भारत की क्षमता पर्याप्त संसाधन जुटाने में बेहतर है. तो फिर हम जरूरतमंद वृद्ध नागरिकों को पेंशन देने की इस जिम्मेदारी को निभाने में पीछे क्यों रहें ?

दूसरी ओर यदि पेंशन परिषद की सभी मांगों को सरकार ने स्वीकार नहीं किया व अपेक्षाकृत कम संसाधनों की राह निकाली तो राजस्थान व पुडुचेरी जैसे कुछ राज्यों ने जो सीमित सुधार किए हैं उससे कुछ राह निकल सकती है. राजस्थान में पेंशन सुधार का जो मॉडल अपनाया गया उससे भी लाखों अतिरिक्त वृद्ध नागरिकों को कुछ महीनों में ही पेंशन उपलब्ध करवाई गई.

यदि केंद्रीय सरकार भी अपने राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम में सुधार करती है ५00 रुपए तक तो अवश्य बढ़ जानी चाहिए.

यदि इतनी ही राशि राज्य सरकार अपनी ओर से जमा कर दे तो प्रत्येक वृद्ध नागरिक को प्रति माह १000 रुपए की पेंशन तो सुनिश्चित हो ही सकती है. कम से कम फिलहाल इतना तो किया ही जाना चाहिए. यह भी मौजूदा स्थिति में

(पृष्ठ ३४ पर....)

विशेष आलेख -२

युवा शक्ति और राष्ट्रीय एकता

-डॉ. एस.एन. सुब्बराव

कहते हैं दुनिया में २२३ राष्ट्र हैं, २० करोड़ की आबादी हमारे पड़ोस में ही है. भूटान ७-८ लाख की आबादी शायद उवौन से भी कम होगी. यूनाईटेड नेशन्स में १९२ राष्ट्र सदस्य हैं. एक बार मुझे मौका मिला था यूनाईटेड नेशन्स में बोलने का, १४०० डेलिगेट्स थे उसमें. बहुत बड़ा हाल है यूनाईटेड नेशन्स का और सदस्य राष्ट्र भी सीढ़ी से ए-बी-सी में बैठते हैं जैसे इधर अलजिरिया, ऑस्ट्रेलिया और उधर कोने में जेड आता है जीम्बाम्बे. बोलते-बोलते मैं सोच रहा था चीन बहुत बड़ा राष्ट्र है, अमरिका बहुत बड़ा पैसे वाला राष्ट्र है. यूनाईटेड किंग्डम हमारे ऊपर २०० साल तक शासन चला कर बैठा है. आधे-आधे सब बैठे हैं लेकिन इनमें से कोई राष्ट्र भारत जैसे हैं नहीं . दूसरे जो कुछ उसका वर्णन किया तो किया ही है ..... भुट्टो ने एक किताब लिखी थी . उसे मैंने पूरी तो पढ़ी नहीं, लेकिन भारत के संबंध में उन्होंने एक बात जो कही थी उतनी बात मैंने पढ़ी. शुरुआत का वाक्य है उसमें - भारत पाकिस्तान के मुकाबले में बहुत विविधता से भरा हुआ राष्ट्र है. यह तो निस्संदेह है. अब हिन्दुस्तान में तमिलनाडु में जाएंगे तो इडली खाना पड़ता है, पंजाब में जाएंगे तो पराठा खाएंगे, बंगाल जाएंगे तो और कुछ मिलेगा. तो एक-एक जगह अलग-अलग खाना. पाकिस्तान में एक ही खाना या तो वहां तो नॉन मिलेगा, तंदूरी मिलेगा और कपड़े में कितना फर्क है हिन्दुस्तान में? केरल वाला कुछ और पहनता है तो पंजाब वाला कुछ औ. संविधान में २२ भाषाएं हैं और सेंट्रल इंस्टिट्यूट ऑफ इंडियन लैंग्वेज जैसे संगठन हैं उनके पास हिन्दुस्तान की १६५२ मातृभाषाओं के नाम हैं तो पाकिस्तान के मुकाबले भारत भिन्नता से भरा देश क्यों? नहीं है? पहला वाक्य यह है. पाकिस्तान के दो टुकड़े हो गए तब भुट्टो दूसरा वाक्य लिखते हैं हम सबने बहुत मना किया अलग मत जाओ हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, पारसी जैन सब एक साथ इकट्ठे रहेंगे. लेकिन उन्होंने कहा नहीं हिन्दुओं के साथ हमारा निभेगा नहीं और कुछ हिन्दू भी ऐसे निकले भाग जाओ, निकल जाओ का समर्थन कर रहे थे तो अलग राष्ट्र बन गया दुर्भाग्य से. उन्होंने अपने राष्ट्र का नाम रखा इस्लामिक रिपब्लिक ऑफ पाकिस्तान. पाकिस्तान मुसलमानों का राष्ट्र हो गया और उसका टुकड़ा हो गया. एक ही धर्म था फिर वह टुकड़ा कैसे हुआ? संविधान में ६ भाषाएं थीं उर्दू, पंजाबी, सिंधी, बंगला और भी कई. बंगाली बोलने वाले बहुत सारे थे, वे

(पृष्ठ २१ पर....)

समाचार भारती - १

गांधी, निशस्त्रीकरण, एवं विकास सम्मेलन इंदौर में ४, ५, ६ अक्टूबर को संपन्न 'गांधी, निशस्त्रीकरण एवं विकास सम्मेलन' संपन्न हुआ. जिसमें देश-विदेश के प्रतिनिधियों की उपस्थिति उल्लेखनीय थी. उसका समाचार प्रस्तुत है.

सम्मेलन — 50 गांधीवादी चिंतक और विचारकों ने व्यक्त किए विचार, समापन आज

विकास की ओर ले जाएगा गांधी दर्शन

गांधीवाद में बहुत ताकत है। अहिंसा और सत्याग्रह गांधीजी के ऐसे दो शस्त्र हैं जो दुनिया में शांति की स्थापना कर सकते हैं। समूचे विश्व में हथियारों की होड़ समाप्त करनी हो और विश्व शांति की स्थापना करना हो तो हमें गांधी के बताए रास्ते पर चलना होगा। ये ही अंतिम विकल्प है।

उक्त विचार गांधीवादी चिंतकों और विचारकों ने गांधी, निशस्त्रीकरण एवं विकास सम्मेलन के दूसरे दिन शनिवार को व्यक्त किए। सुखलिया स्थित एक सभागृह में हुए आयोजन में 50 से ज्यादा गांधीवादी चिंतक शामिल हुए। मुख्य अतिथि जस्टिस ए.के. पटनायक ने कहा गांधी नहीं चाहते थे कि देश एक-दूसरे से डर के कारण हथियारों की होड़ में शामिल हों। अपनी सुरक्षा की खातिर परमाणु हथियारों का निर्माण करें। सही अर्थों में निशस्त्रीकरण के लिए नागरिकों का राजनीतिक सशक्तिकरण करना आवश्यक होगा। सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक अधिकारों का विकेंद्रीकरण किया जाए ताकि प्राकृतिक संसाधनों का सही दोहन और वितरण संभव हो सके। इस मौके पर रिसर्च स्कॉलर डॉ. मानसी महती, अजय लेले, डेविड चार्ल्स वेब, बर्नी मेअर, रवा विशेषज्ञ जी. पार्थसारथी, जे. नारायण राव, एन.डी. जयप्रकाश, भौतिक शास्त्री डॉ. राम श्रीवास्तव, के. यादव रेड्डी, इकोलिस त्सावरिडीस आदि ने संबोधित किया।

सेमिनार में विचार रखते अतिथि।

इस मौके पर पूर्व एडमिरल विष्णु भागवत, जनक मंगलियन, राज्य महिला आयोग की पूर्व अध्यक्ष डॉ. सविता इनामदार, डॉ. पंकज चौहान आदि मौजूद थे। संचालन डॉ. प्रीति सिंह ने किया।

आज एशियन यूनियन फॉर पीस एंड डेवलपमेंट पर चर्चा

समापन के तीसरे दिन रविवार को 'एशियन यूनियन फॉर पीस एंड डेवलपमेंट' विषय पर चर्चा होगी। कार्यक्रम डॉ. वेद प्रताप वैदिक, प्रो. देवव्रत और यतुआ ओकाटा (जापान) के आतिथ्य में होगा।

पहला दिन : ४ अक्टूबर २०१३ — दैनिक भास्कर

पार्टियों की फंडिंग पर कंट्रोल क्यों नहीं?

[निशस्त्रीकरण पर अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस] जस्टिस पटनायक ने उठाया सवाल

इंदौर
cityreporter.indore@patrika.com

जब-जब अमेरिका किसी मुल्क पर हमला बोलता है, अमेरिकी जनता तत्परता से युद्ध के विरोध में सड़कों पर उतरती है। ये लोकतंत्र की ताकत है, जब खुद को महाशक्ति बताने वाले को जनता की बात सुनना पड़ती है। यानी निशस्त्रीकरण केवल राजनयिकों के बातें करने से नहीं होगा। जब जनता युद्ध के खिलाफ बोलेगी, तो राष्ट्र निशस्त्रीकरण का मार्ग अपनाएंगे। यह बात सुप्रीम कोर्ट जस्टिस एके पटनायक ने अंतरराष्ट्रीय पीस कॉन्फ्रेंस में कही।

उन्होंने सवाल उठाया, हमारे देश में राजनीतिक पार्टियों की फंडिंग को नियंत्रित करने की कोई व्यवस्था नहीं है। आज फंडिंग को नियंत्रित करने के लिए कानून बनाने की जरूरत आ गई है। यूनिवर्सल पीस एंड सोशल डेवलपमेंट सोसायटी द्वारा आयोजित संगोष्ठी के दूसरे दिन के पहले सत्र का विषय था- जनकेंद्रित विकास। नर्मदा बचाओ आंदोलन से जुड़े केस का जिक्र कर जस्टिस पटनायक ने बताया, इधर बांध के डूब प्रभावितों के पुनर्वास में देरी हो रही थी, उधर सरकार ऊर्जा मांग पूरी करने का हवाला देकर बांध जल्द से जल्द शुरू करने पर आमदा थी। हमने कहा, हमें दफ्तर में एसी चलाने के लिए ऊर्जा मत दो, पर पुनर्वास करो। इस बात को 5 साल हो गए हैं, पर पुनर्वास अब तक जारी है। जहां एक को सुविधा देने के लिए दूसरे का घर और जीविका छीन ली जाए, उसे हम विकास कैसे कहें?

आनंद मोहन माथुर सभागृह में अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते जस्टिस पटनायक।

कोई विकल्प नहीं था

विदेश मामलों के विशेषज्ञ जी.पार्थसारथी ने कहा, विनाशक हथियारों के उन्मूलन के लिए जब तक सभी राजी नहीं होंगे, तब तक अकेले देश भी निशस्त्रीकरण की राह पर नहीं चल सकते। पं. नेहरू से राजीव गांधी के जमाने तक हम निशस्त्रीकरण की नीति पर चले, पर 80 के दशक में सूचना मिलने लगी, पाकिस्तान व चीन ने परमाणु हथियार बना लिया है। ऐसे में हमारे पास दूसरा विकल्प नहीं था, सिवाय अपनी शक्ति को मजबूत करने के। हम बापू के सिद्धांतों व निशस्त्रीकरण के समर्थक हैं, पर राष्ट्रीय सुरक्षा की अनदेखी नहीं की जा सकती।

ज्यादा पनपता है आतंकवाद

ड्रोन हमलों से आतंकवाद की रोकथाम नहीं होती, बल्कि आतंकवाद की जड़ें और गहरी हो जाती हैं। अमेरिका को लगता है, ड्रोन हमलों से उनके खिलाफ आतंक फैलाने वालों का खात्मा हो जाएगा, जबकि इन्हीं हमलों का उदाहरण देकर नए आतंकवादी तैयार किए जाते हैं। ब्रिटेन में नागरिकों और अंग्रेजी समाज के मामलों पर सरकारों और शैक्षणिक संस्थाओं को कंसल्टेंसी देने वाले डॉ. पार्नी ... ने यह बात दूसरे सत्र के अध्यक्षीय उद्बोधन में कही।

छेड़खानी का नतीजा

हम उत्तराखंड की नदियों को बांधने की बात करते थे, तो सबको लगता था, हम विकास को रोकना चाहते हैं। विकास के नाम पर हुई छेड़खानी से वहां विनाशलीला हुई। उत्तराखंड से आए सर्वोदयी कार्यकर्ता राधा भट्ट ने कहा, हम सिद्धांतों से पढ़ते हैं, भारत कृषिप्रधान देश है, पर देश में सभी कृषकों को मजबूत करने वाली नीतियां नहीं बनीं। आजादी हासिल करते ये, खुशहाल लोगों के हाथ में सत्ता देना ऐसी आजादी का लक्ष्य नहीं है।

चीन दे सकता है बड़ी चुनौती

चर्चा में बोले जी. पार्थसारथी

इंदौर। भारत को राजनीतिक और आर्थिक मोर्चे पर बहुत मजबूत होने की जरूरत है, वरना चीन हमारे लिए बड़ी चुनौती खड़ी कर सकता है। हमारे पड़ोसियों को हमारे खिलाफ उकसाना चीन की नीतियों का अभिन्न अंग है। यह बात विदेशी मामलों के विशेषज्ञ जी. पार्थसारथी ने पत्रिका के साथ हुई खास बातचीत में कही। उन्होंने कहा, पाकिस्तान में अजीब से उग्रवाद पैदा हो गया। वहां सलाफी इस्लाम (मूलतः सऊदी अरब से ताल्लुक रखने वाली इस्लाम की धारा) पनप रही है, जो भारतीय उपमहाद्वीप के सूफी, बरेलवी और देवबंदी इस्लाम को हमदम नहीं मानती। ऐसा उग्रवाद बांग्लादेश या इंडोनेशिया में नहीं मिलेगा। पाक में मस्जिदों में, ईसाइयों पर हमलों में 30 से 40 हजार मौतें हो गई हैं। ऐसे में पाक सरकार लोगों का ध्यान अफगानिस्तान व भारत की ओर मोड़ देती है। देश में हंगामे न हों, इसलिए बाहर हंगामे करवाए जाते हैं। इससे निपटने के लिए एक नहीं, कई रास्तों को अपनाना होगा, सैन्य कार्रवाई भी एक विकल्प हो सकती है, पर यही अंतिम विकल्प नहीं है।

दुनिया को मिलेगा इंदौर घोषणा पत्र

रविवार को विनोबाजी के जन्मदिन पर इंदौर का नाम ... आखिरी कॉन्फ्रेंस के समापन पर इंदौर घोषणा पत्र पारित होगा। आयोजन समिति के चेयरमैन और वरिष्ठ समाजसेवी आनंद मोहन माथुर ने बताया, इंदौर में हुई चर्चाओं के निष्कर्षों के आधार पर विशेषज्ञों की टीम घोषणा पत्र बनाएगी, जो शांति स्थापना जैसी गतिविधियों के लिए अपार ... दस्तावेज का काम करेगा।

जतन नहीं, लोग महत्वपूर्ण

अमेरिकन गांधी कहलाने वाले बर्नी मेयर जब भारत आए तो युवाओं ने तालियों से उनका स्वागत किया। वे बापू की वेशभूषा में ही नहीं, बल्कि बापू की बोली में भी बोले, जब देश को आजादी मिली, तो दिल्ली में नहीं था। मैं नोआखाली में था, क्योंकि वहां हिंदू-मुस्लिम आपस में लड़ रहे थे। मेरे भाई-बहनों का खून बह रहा था। उन्होंने कहा, जश्न कैसे मनाता? श्रोताओं ने उनके हर वाक्य के बाद तालियां बजाईं।

हमारी कोशिश है, सूरत बदलनी चाहिए

अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस में पारित हुआ इंदौर घोषणा पत्र, विदेशी प्रतिनिधियों ने दी जनदखेस पर सहमति

इंदौर

इंदौर घोषणा पत्र प्रमुख बिंदु

रोकना होगा हस्तक्षेप

अगले वर्ष एशियाई देशों की कॉन्फ्रेंस।

फ्रोजन रिलेशनशिप का दौर

- जस्टिस सीएस धर्माधिकारी

उन्हें हथियार प्यारे हैं

- डेविड वेब,

युवाओं से हुई प्रसन्नता

अब तीसरा नहीं

अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस | आखिरी दिन एशियाई यूनियन फॉर पीस पर वक्ताओं ने रखे विचार

गांधी के सामने नहीं थी इतनी समस्या

आनंदमोहन माथुर सभागृह में वक्ताओं को सुनने के लिए बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे।

इंदौर। आतंकवाद-माओवाद जैसी समस्याएं आज जितनी हमारे सामने हैं उतनी कभी महात्मा गांधी के सामने नहीं रहीं। उनके जाने के बाद हमें आगे बढ़कर विश्व शांति के लिए प्रयास करना है। बेशक उनके विचारों को आधार बनाकर क्रांति लाई जा सकती है, मगर इसके लिए देश की जनता को अपनी भूमिका सबसे पहले तय करना होगा। जनआंदोलन के लिए खासकर युवाओं को मोर्चा संभालने की जरूरत है।

यह विचार जस्टिस चंद्रशेखर धर्माधिकारी ने रविवार को आनंदमोहन माथुर सभागृह में व्यक्त किए।

वे यूनिवर्सल पीस एंड सोशल डेवलपमेंट सोसायटी द्वारा गांधी निशस्त्रीकरण और विकास विषय पर अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस के अंतिम दिन बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुए। उन्होंने कहा कि मनी पावर, मसल्स पावर, माफिया पावर और मीडिया पावर, जब तक ये चारों 'एम' पावर विश्व में रहेंगे शांति स्थापित करना बहुत मुश्किल है।

एशियाई देशों की अलग मुद्रा बने

एडमिरल विष्णु भागवत ने कहा कि वर्तमान हालात को देखते हुए एशियाई देशों को भी अपना अलग संघ बनाने की जरूरत है। जैसा कि लैटिन अमेरिका के देशों ने बना रखा है। संघ के जरिए हम योरपियन देशों के प्रभुत्व वाले विश्व व्यापार की व्यवस्था को तोड़ सकते हैं। गांधी के विचारों पर आज बहुत कार्य करने की जरूरत है। आज हर चीज को ज्यादा बताकर उस पर दबाव डाला जाता है, जो किसी भी देश के लिए चुनौतीपूर्ण है। हमारे पास बहुत कुछ है, पर कुछ नहीं है। हमें इसको समझने की जरूरत है।

एक-दूसरे की आवाज बनना होगा

पूर्व कुलपति एए अब्बासी ने कहा कि योरपियन यूनियन की तरह एशियाई देशों को भी एकजुट होकर अपनी ताकत दिखाना होगी। अभी हम लोगों को विश्वमंच पर कमजोर साबित किया जाता है। एशियन यूनियन बनकर हम एक-दूसरे की आवाज को बुलंद कर सकते हैं, तभी देशों के आंतरिक मसलों को आपस में बैठकर निपटाया जा सकेगा। उन्होंने कहा कि भारत बहुत बड़ा महाद्वीप है और यहां सब कुछ है। कोई ना कोई ऐसी चीज है जो पूरे विश्व को हमारी तरफ खींचती है। आज धर्म, जाति तथा सामाजिक कुरीतियों ने देश को बांट दिया है। बस इसे दूर करने की जरूरत है।

असली रुपया बनाओ...

वरिष्ठ पत्रकार वेदप्रताप वैदिक ने कहा कि सार्क की स्थापना होने के सालों बाद आठवां देश अफगानिस्तान जुड़ा है। इन सभी दक्षिण एशियाई देशों की मुद्रा रुपया है। योरपियन और अमेरिकी देशों की तरह हम खुद अपनी मुद्रा क्यों नहीं बनाते, तभी हमारा संगठन मजबूत बनकर विश्व में उभरेगा। एक मुद्रा बनाने के पीछे आपसी एकता नजर आती है, जो अभी बड़े देशों को दिखाने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि योरपियन कॉमन मार्केट का सभी देशों के साथ मिलकर 200 अरब डॉलर का व्यापार है, जबकि सार्क के देश आपस में ही 7 अरब डॉलर का व्यापार करते हैं। यही वजह है कि हमारा खुद का कॉमन मार्केट हो, जहां आने-जाने से लेकर पासपोर्ट और वीजा जैसी समस्या को दूर किया जा सके।

विनाश सिर्फ जनता का ही

ब्रिटेन के डेविड चार्ल्स वेब ने कहा कि परमाणु हथियारों की होड़ में हर देश दूसरे को नीचा दिखाने में लगा है। विनाश सिर्फ देश की जनता का ही है। जापान के हिरोशिमा-नागासाकी, अमेरिका का वर्ल्ड ट्रेड सेंटर जैसे कई उदाहरण हमारे सामने हैं। इसके बावजूद ये बात कोई समझने को तैयार नहीं है। हथियारों के निर्माण के अलावा खरीदी-बिक्री पर भी पाबंदी लगाने की जरूरत है।

परमाणु हथियार पर पाबंदी से ही शांति

जापान के यासुओ ओगाटा ने कहा कि विश्व में शांति स्थापित करने के लिए परमाणु हथियार के निर्माण पर पाबंदी जरूरी है। उसके बिना शांति मुश्किल ही नहीं, नामुमकिन है। हथियारों की इस होड़ में सभी देश अपने आप को ताकतवर बताने में ल. । है।

नई संधि सभी पर लागू हो

विशेषज्ञ एनपी जैन ने कहा कि न्यूक्लियर प्रोहिबीशन ट्रीटी (एनपीटी) 2015 में पूरी हो रही है। नई संधि पर हस्ताक्षर करने के पहले सभी देशों को अपना मत रखना होगा कि संधि सभी देशों पर समान रूप से लागू होगी, तभी हस्ताक्षर किए जाएंगे। अभी यह हो रहा है कि कुछ बड़े देश अपनी मनमानी करने में लगे हैं और छोटे व कमजोर देशों को दबा रहे हैं।

नहीं ली अब तक सीख

संयोजक आनंदमोहन माथुर ने कहा कि दूसरे विश्व युद्ध के दौरान जापान के हिरोशिमा-नागासाकी पर परमाणु हथियारों से हमला किया गया। साढ़े तीन लाख मासूम लोग मारे गए। इस घटना से अब तक एक भी देश ने सीख नहीं ली है और आज भी आपस में लड़ते नजर आ रहे हैं।

मुकुंद कुलकर्णी, श्यामसुंदर यादव, डॉ. सविता इनामदार, तपन भट्टाचार्य, डॉ. उषा तिवारी, डॉ. गणेश कावड़िया, डॉ. राम श्रीवास्तव, जे. नारायणराव, डॉ. अनिल भंडारी, पीसी जैन, पुष्पा सिन्हा, सतीश जैन, अशोक मित्तल, श्याम पांडे आदि मौजूद थे। -नप्र

यहां से आए प्रतिनिधि

अमेरिका, जापान, नेपाल, ब्रिटेन समेत दिल्ली, महाराष्ट्र, बिहार, उड़ीसा, गुजरात, छत्तीसगढ़, जम्मू-कश्मीर, आंध्र प्रदेश, झारखंड, केरल आदि प्रदेशों से 600 से अधिक प्रतिनिधि शामिल हुए।

सहयोगी संस्थाएं

- कस्तूरबा गांधी नेशनल मेमोरियल ट्रस्ट
- ऑल इंडिया पीस एंड सालिडेटरी आर्गनाइजेशन एसोसिएशन
- देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
- गांधी शांति प्रतिष्ठान नई दिल्ली
- सेंटर फॉर कल्चरल-एजुकेशन-इकोनॉमिक्स एंड सोशल स्टडी नागपुर
- नेशनल यूथ प्रोजेक्ट, नई दिल्ली
- आंतर भारती पुणे
- हारमोनी फाउंडेशन इंदौर
- अभ्यास मंडल
- गांधी मजदूर मेमोरियल ट्रस्ट

तीसरा दिन : ४ अक्टूबर २०१३ नई दुनिया

अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन | एशियन यूनियन फॉर पीस एंड डेवलपमेंट विषय पर बोले विद्वान

एशिया के लिए बने लैटिन अमेरिकी देशों जैसा संघ

भास्कर संवाददाता | इंदौर

सम्मेलन में प्रबुद्धजनों को सुनने बड़ी संख्या में लोग पहुंचे।

एशियाई देशों को उसी प्रकार का संघ बनाने की आवश्यकता है जैसा लैटिन अमेरिकी देशों में चल रहा है। इस संघ के जरिए हम यूरोपियन देशों के प्रभुत्व वाले विश्व व्यापार की व्यवस्था को तोड़ सकते हैं। इसी प्रक्रिया से विश्व के लिए एक मुद्दा बना सकते हैं। आज जो व्यवस्था चल रही है, उसे गांधीजी कभी भी पसंद नहीं करते, क्योंकि इसने हर स्तर पर विषमता पैदा की है। पश्चिमी देशों का लोकतंत्र आज आवश्यक नहीं है। यह समुचित विकास की दृष्टि से सही नहीं है। उक्त विचार एडमिरल विष्णु भागवत ने गांधी निशस्त्रीकरण एवं विकास पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के समापन पर व्यक्त किए।

बापट चौराहा के समीप सभागृह में सम्मेलन के अंतिम दिन विषय था 'एशियन यूनियन फॉर पीस एंड डेवलपमेंट'। इस मौके पर वरिष्ठ पत्रकार वेदप्रताप वैदिक ने कहा- 1915 से पहले कोई गांधी को नहीं जानता था। 1920 के बाद पूरा विश्व उनके विचारों का पालन करने लगा। उनका मकसद केवल आजादी कराना ही नहीं मनुष्य को आजाद कराना था। उन्हें सच्चा पुरुष, सत्यनिष्ठ और पशु से मनुष्य बनाना था। पूरी दुनिया की आजादी गांधीजी के विचारों के बिना नहीं हो सकती। आज भारत को नई सोच के साथ आगे बढ़ने की जरूरत है। देवी अहिल्या यूनिवर्सिटी के पूर्व कुलपति ए.ए. अब्बासी ने कहा- हम भारत को अलग-अलग हिस्सों में बांटकर क्यों जी रहे हैं? यहां सब कुछ है। कोई ना कोई ऐसी चीज है जो पूरे विश्व को हमारी तरफ खींचती है। आज धर्म और जाति व सामाजिक कुरीतियों ने देश को बांट दिया है जिससे एकता टूटी है।

धनबल-भुजबल के रहते शांति व विकास असंभव

चंद्रशेखर धर्माधिकारी ने कहा- सांस्कृतिक संबंध साथ रहने से बनते हैं, दूर-दूर रहने से नहीं। हमें पास में रहने की आदत डालनी होगी। अर्थशास्त्र के [illegible] से सोचने वाले दूसरे की परेशानी या स्थिति से लाभ उठाना सीखते हैं। समाज में जब तक धनबल, भुजबल और प्रभुत्व रहेगा तब तक देश में शांति व विकास नहीं हो सकता। सम्मेलन को यसुओ ओंगाटा (जापान), कर्नी मेकर (अमेरिका), हेमंत रानाडे, डेविड चार्ल्स वेब (यूके) व राजकिशोर भट्ट ने भी संबोधित किया। इस बीच घोषणा-पत्र का वाचन सम्मेलन संयोजक एस.पी. जैन ने किया। संयोजक आलोक खरे ने बताया तीन दिन में 10 से ज्यादा राज्यों के 600 से अधिक प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। डॉ. सविता इनामदार के मुताबिक आयोजन में 70 विद्वानों ने व्याख्यान दिया। संचालन पत्रकार जयदीप कर्णिक ने किया। आभार सुहास पुरन्दरी ने माना।

(पृष्ठ १५ से....)

बराबर का स्टेटस रखते थे. एक ही धर्म का मेरा पाकिस्तान टुकड़ा हो गया, यहां भारत में इतने धर्म हैं फिर भी एक बना हुआ है. चार धर्म तो यहीं पैदा हुए हैं हिन्दू धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म, सिक्ख धर्म और बहुत लोगों को याद भी नहीं आता था कि दुनिया में सबसे ज्यादा मुसलमान रहते हैं इंडोनेशिया में और दूसरे नंबर पर भारत में्. न पाकिस्तान में, न सऊदी अरेबिया में जहां इस्लाम पैदा हुआ और कहीं भी नहीं हैं इतने ज्यादा मुसलमान जितने भारत में रहते हैं और हमारे तीन राज्य तो ईसाई बहुल हैं- नागालैंड, मिजोरम, मेघालय. करीब-करीब ७० प्रतिशत लोग यहां पर ईसाई रहते हैं. तो धर्म की दृष्टि से, भाषा की दृष्टि से, खान-पान की दृष्टि से, रहन-सहन की दृष्टि से इतना भिन्न भारत? भुट्टो जेल में बैठे-बैठे सोचते हैं मेरे पाकिस्तान के दो टुकड़े हो गए और भारत के संविधान में २२ भाषाएं हैं. तो क्या होना था २२ भाषाओं के हिन्दुस्तान में?

तीन भाषाएं थी खूबसूरत यूगोस्लाविया में आज तीन टुकड़े होकर पड़ा है. न जाने कितने नौजवानों को, लड़कों को, लड़कियों को भेजा यूगोस्लाविया में एक रोड बनाने के लिए. मार्शल टीटो एक बहुत अच्छे नेता थे. पंडित जवाहरलाल नेहरु के बड़े जिगरी दोस्त थे. उन्होंने नौजवानों से पूछा तुमने बनायी है सड़क? क्या नाम रखना चाहते हो? तो नौजवानों ने कहा हम चाहते हैं यूनिटी, फ्रेटरनिटी हाईवे रखें इसका नाम. एकता भ्रातृ भाव का हाइवे बनाएं, जिस इतनी सुन्दर सड़क को ७७ देशों के नौजवानों ने मिलकर बनाया. आखिर में कहा - यूगोस्लाविया एक नहीं हो सकता है एक-एक भाषा का एक-एक टुकड़ा बना दो. उसके बगल में चेकोस्लाविया एक राष्ट्र है बहुत सुन्दर. दो ही भाषाएं थीं, दो टुकड़े हो गए. चेक अलग हो गया, स्लाविया अलग हो गया और हमारे पड़ोसी श्रीलंका में ४ धर्म हैं, बौद्ध, हिन्दू ज्यादा हैं, ईसाई और मुस्लिम कुछ कम. लेकिन आपने अखबार में पढ़ा नहीं, १० साल में कहीं हिन्दू बौद्ध लड़ गए हों्. लेकिन १० साल की लड़ाइयों में करीब-करीब ७० हजार लोग मारे गए हैं श्रीलंका में्. दो ही भाषा तमिल और सिंहली, दोनों भाषाओं की लड़ाई खत्म ही नहीं हो पा रही थी. रोज खबर आती ये मर गया, वो मर गया. तो भारत के लोगों को सोचना है दो-दो भाषा के राष्ट्र के टुकड़े हो गए. बहुत आधुनिक देश माना जाता है कॅनाडा उसमें बाहुल्य है अंग्रेजी बोलने वालों का. पूरे कॅनाडा में ईसाई रहते हैं और धर्म भी ईसाई है केनेडा में लेकिन एक क्षेत्र है पूरब में वहां फ्रेंच बोलते हैं. मैं उधर भी गया इधर भी गया दोनों शांति कार्यकर्ताओं के बीच में गया तो फ्रेंच बोलने वाले बोलते हैं हम तो अंग्रेजी

बोलने वालों के साथ नहीं रह सकते हमारा राष्ट्र अलग बनेगा. उनके प्रधानमंत्री बोलते हैं मैंने मान लिया तुम्हारा अलग राष्ट्र बनाना पड़ेगा. पता नहीं कब वह अलग राष्ट्र बनेगा खुद एक उनका राज्य है, खुद एक फ्रेंच राष्ट्र बन जाए. मैं दोनों के पास गया भाई दोनों शांति के कार्यकर्ता हो और ईसाई हो, कपड़े एक से पहनते हो और खाना एक-सा खाते हो, कपड़े एक से पहनते हो और खाना एक-सा खाते हो, वो ही डबल रोटी मारवन. अलग क्यों हो जाएंगे? वो बोलता वो अंग्रेजी बोलते हैं हम फ्रेंच बोलते हैं. मैं उनसे बोला आप फ्रेंच बोलते हैं इग्लिंश बोलने में आपको तकलीफ है लेकिन लिपि तो एक ही है तुम्हारी. नहीं, लिपि तो एक है, पर भाषा तो अलग-अलग है. मैं उनको बोला तुम भाषा की बात कर रहे हो. तब भारत में डॉ- कलाम राष्ट्रपति थे. तो मैं उनको बोला, लिपि तो एक होने के बाद भी आपका झगड़ा है लेकिन हमारे देश के अंदर ऐरे-गैरे की बात छोड़ो, मेरा राष्ट्रपति अगर अपनी मातृभाषा का एक शब्द बोलेगा तो मेरा प्रधानमंत्री कुछ भी नहीं समझ पाएगा. एक शब्द भी नहीं. क्योंकि मनमोहन सिंह तमिल क्या जाने? चाहे मनमोहन सिंह जी हो, चाहे वाजपेयी जी हों. तो कलाम साहब की तो तमिल मातृभाषा. वे चकित रह गए कि क्या राष्ट्रपति की भाषा प्रधानमंत्री नहीं समझते? उन्हें बोला या तो हिन्दी में बोलना पड़ता है या अंग्रेजी में बोलना पड़ता है. मातृभाषा उनकी पंजाबी है और इनकी मातृभाषा तमिल है, तो यह भारत की विशेषता है कहा अभी जो राष्ट्रपति हैं तो वे मराठी बोलते हैं. (श्रीमती प्रतिभा पाटिल जब राष्ट्रपति, तब लिखा गया लेख है यह) मराठी हमारे प्रधानमंत्री नहीं समझते हैं, लेकिन हिन्दी में दोनों चला लेते हैं, इंग्लिश में दोनों चला लेते हैं. लेकिन हमारे यहां तो डॉ- राधाकृष्णन राष्ट्रपति बने, तेलगु उनकी मातृभाषा. पण्डित जवाहरलाल नेहरू तेलगु नहीं समझने वाले थे. वैंकटरामन बने. कितने सारे बन गए. लेकिन भारत एक बना हुआ है और एक बना रहने का है और कैसे बना रहे मैं और आप क्या कर सकते हैं इसमें.

हमारे देश में भारत सरकार ने बनाकर रखा है राष्ट्रीय एकता परिषद और प्रधानमंत्री से मिला मैं बोला किस लिए बना रखा है यह? मुझे मेम्बर बनाया है, मुझे निकाल दीजिए इससे. कुछ भी नहीं करना खाली नाम के लिए बनाया है, मुझे निकाल दीजिए तुरन्त फोन किया गृह मंत्रालय को कम से कम बैठक तो बुलाओ, एक बैठक बुलाई है, लेकिन बैठक में सब राजनीति वाले थे, गुजरात के मुख्यमंत्री थे, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री, तमिलनाडु के मुख्यमंत्री सभी मुख्यमंत्रियों का भाषण हो गया क्योंकि भारत इतनी विविधता से भरा हुआ है- धर्म के नाम पर, भाषा के नाम पर, रिवाज के नाम पर सब तरह से

उसमें एकता लाने का काम है, राष्ट्रीय एकता परिषद का. प्रधानमंत्री उसके अध्यक्ष हैं. बैठे थे प्रधानमंत्री, सोनिया गांधी, अटल बिहारी वाजपेयी, एल. के. आडवाणी, अर्जुन सिंह पूरे सुबह १० बजे से शाम ७ बजे तक बैठे रहे और राजनीतिक भाषण हो गया उसमें मेरे जैसे आदमी को तो २ मिनिट बोलने में घंटी बज गई और मुख्यमंत्री बोल रहे हैं, पौने-पौने घंटे बोल रहे हैं लेकिन हम सब मिलकर क्या कर सकते हैं. मैं मिसाल देता रहता हूं- पोलियो अभियान हो रहा है न? डॉ. आता है बोलता है, माताजी तुम्हारे बच्चे को पोलियो की दवा देना है मां बोलती है- अरे! मेरा बच्चा तो हट्टा-कट्टा है, बीमार नहीं है उसको क्यों दवा पिलाते हो, तो डॉ. को समझाना पड़ता है माताजी हट्टे-कट्टे बच्चे को ही पिलाने की है यह दवा. एक बार कोई पैर टेढ़ा हो गया तो कोई इलाज नहीं है दुनियां में. कोई इलाज है ही नहीं. उसी तरह ये राष्ट्रीय एकता का काम है. झगड़ा हो गया, उसके बाद सोचने का नहीं. भारत के किसी कोने में झगड़ा न हो, अगर झगड़ा हो जाए तो उसको आपस में सुलझा लिया जाए यह प्रयास करना चाहिए. प्रधानमंत्री से मैंने कहा- आपके पास तो एक ही इलाज सूझता है चाहे वह मणिपुर का झगड़ा हो या सांवेर का हो, कहीं भी झगड़ा हो या तो बन्दूक भेजते हैं या पुलिस भेजते हैं और पुलिस का झगड़ा न हो इसके लिए कोई ट्रेनिंग चाहिए भारत के नागरिकों को. तो राष्ट्रीय एकता समिति को यह काम करना चाहिए, परिषद को यह काम करना चाहिए कि देश भर में झगड़ा ही न हो. उसकी ट्रेनिंग कैसे मिल सकती है? वह ट्रेनिंग होगी, अगर सब मिलकर सर्वधर्म प्रार्थना करें. अगर सब मिलकर कुछ भी करें. मैं हमेशा बोलता रहता हूं. आप भी सोचें इसके बारे में.

भारत आजाद हुआ १५ अगस्त, १९४७ के बाद दुनिया के ११० राष्ट्र आजाद हुए हैं. एशिया में, दक्षिण अफ्रीका के तो पूरे ५२ राष्ट्र. स्वतंत्र राष्ट्र हो गए और जो-जो आजाद हुए उनका कोई न कोई नेता रहा होगा, केनिया में नेता रहे उन्हें भी हम सब जानते हैं, दक्षिण अमेरिका के श्री मण्डेला अभी जीवित हैं उन्होंने सब लोगों के साथ मिलकर एक किताब लिखी है. ये सब लोग लिखते हैं हमको प्रेरणा भारत से मिली, महात्मा गांधी से मिली, भारत आजाद हो गया न बंदूक चलाई, न बाण चलाया, किसी को मारा नहीं, प्यार से और शांति से और अहिंसा से आजाद हो गया तो हमको लगा हम क्यों न हो जाएं? ये सारे के सारे मानते हैं कि भारत से हमको प्रेरणा मिली जब हम आजाद हुए उसके बाद करीब ११० राष्ट्र दुनिया के आजाद हुए और ये करीब-करीब सभी यूनाईटेड नेशन्स तक पहुंच गए हैं, तो मतलब आधा यूनाईटेड नेशन्स भारत की आजादी के बाद आजाद हुआ था. लेकिन दुर्भाग्य दुनिया का क्या है? दुनिया में मत जाओ. हमारे

अड़ोस-पड़ोस में देख लो. पाकिस्तान में क्या उसको आजादी कहेंगे? या म्यांमार बर्मा में, एक महिला जो १३ साल पहले चुनी गई ८५ प्रतिशत वोट से चुनी गई थी राष्ट्रपति बनने के लिए. लेकिन बन्दूक वाला गया नहीं था, वह घर बैठा, बाहर नहीं निकला था और कोई चुनाव का सवाल ही नहीं है न पाकिस्तान में है न वहां है. (म्यांमार की स्थिति अभी थोड़ी बदल चुकी है) नेपाल में किसी तरह से कर रहे हैं बेचारे. उनको भी वहां बहुत तकलीफ है. श्रीलंका में है लेकिन वो झगड़ा भाषा के झगड़े का है. अफ्रीका में तो और ज्यादा हुआ है विदेशी हुकुमत से स्वतंत्र हुआ, विदेशी हुकुमत का गुलाम बना. एक-एक राष्ट्र की यह हालत हुई. तो इससे बचे कैसे दुनिया? जहां हमारी आकांक्षा है हालांकि यूनाईटेड स्टेट भी बोलता है हम चाहते हैं, सब जगह प्रजातंत्र चले. लेकिन हर जगह वह डिक्टेटर की ही मदद करता है. अमरीका की विशेषता है प्रजातंत्र का ढिंढोरा पीटेगा और डिक्टेटर को खूब मजबूत करेगा. खैर वह अलग कहानी है. एक बात हम सोचें कि क्यों डिक्टेटर बन जाता है? और डिक्टेटर तो बहुत ही कम है. है ही नहीं. क्या होता है कि मिलेट्री वालों को ट्रेनिंग मिलती है अभी ब्रिटिश क्वीन के बाद में जो वहां का राजा बनने की लाईन में खड़ा है उस पर भी वहां का कानून लागू होता है. नौजवानों को मिलेट्री का ट्रेनिंग देने का. मिलेट्री की ट्रेनिंग लेगा- मतलब रानी का बेटा है इसीलिए उसको कोई बड़ा ओहदा नहीं मिलता है. उसको ज्यादा लेफ्ट राईट करना पड़ता है. ट्रेनिंग करते-करते अगर उससे अच्छा हो अगर नेतृत्व की भावना उसमें हो तो वह जनरल बनेगा. तो मिलेट्री में बकायदा ट्रेनिंग लेकर ही वह आगे बढ़ता है आदमी. लेकिन एक सिविलियन सोसायटी में क्या होता है आप जानते हैं? क्या ट्रेनिंग लेकर आते हैं राजनीति वाले जो नेता बने हैं हमारे हैं या पाकिस्तान में हैं या दुनिया में सब जगह नॉन मिलेट्री का नेतृत्व बना है. कहीं तो पैसे से खरीद लिया है नेतृत्व और कहीं धोखेबाजी से कर लिया. एक जगह तो पैसे से खरीदा हुआ राष्ट्रपति और एक जगह मिलेट्री से ट्रेनिंग लिया हुआ. ट्रेनिंग मिलना चाहिए. महात्मा गांधी का ही विचार था आम जनता को क्या ट्रेनिंग मिले? बंदूक की ट्रेनिंग दे? नहीं वह तो शांति के लिए चाहिए और स्वराज्य के लिए चाहिए. तो क्या ट्रेनिंग होगी उस ट्रेनिंग के लिए गांधीजी ने तो प्रयास शुरू किया था. हम लोगों को सोचना चाहिए. उसके लिए उवौन में बहुत अच्छा वायुमंडल है क्योंकि यहां कुछ काम हुआ भी है, हो सकता है. और हो सकता है सारे हिन्दुस्तान में राष्ट्रीय एकता परिषद का काम ही है यह प्रोत्साहन दें. जगह-जगह लोग इकट्ठे हो. महिने में दो बार, तीन बार हमारी बस्ती को साफ करें, क्षिप्रा नदी को साफ करें और जहां-जहां कुछ भी

हो समाज सुधारने के लिए वे करते जाएं. यदि कर सकेंगे तो मिलिट्री हुकुमत सिवीलियन हुकुमत के अधीन रहती है. आपने सुना होगा कि कहीं समाज की गिरावट होती है तो दोनों प्रकार के लोग जिम्मेदार होते हैं एक प्रकार के लोगों को हम कहते हैं सक्रिय दुर्जन उसका ट्रेनिंग ये होता है, जेब काटने का ट्रेनिंग. डॉ. मार्टिन लूथर किंग के शब्दों में निष्क्रिय जवान को, सक्रिय दुर्जन की आलोचना करने का अधिकार नहीं होता. तो सक्रिय दुर्जन, निष्क्रिय जवान दोनों के कारण समाज की गिरावट होती है. हममें से अधिकांश निष्क्रिय जवान हैं तो हिन्दुस्तान कैसे तरक्की कर सकता है? हमारे एक भाई ने एक नारा लगाया, अच्छा लगा. वे कहते थे- एक घंटा देह को, एक घंटा देश को. २२ घंटा अपने लिए काम करो और एक घंटा समाज के लिए दो तो क्या देख सकते हैं हम जहां है, वहां हमारा समाज है. कोई मोहल्ले में है, उसकी मोहल्ले में क्या-क्या जरूरत है? गरीब बस्ती कहां है? गन्दी बस्ती कहां है? वहां जाकर काम करेंगे, महिने में एक बार करेंगे तो एक नागरिक शक्ति बनेगी. नागरिक शक्ति बहुत कुछ कर सकती है. बंगाल में नंदी ग्राम बहुत मशहूर हो गया अब नंदीग्राम में जनता की शक्ति के कारण सरकार ने कह दिया बहुत सारा प्रयास किया लेकिन लोगों ने कहा मारो, गोली चलाओ, पर अपनी जमीन नहीं छोडेंगे. सरकार ने कहा अच्छी बात है बाबा तुम्हारी जमीन हम नहीं छुएंगे. २५ हजार गरीब से गरीब लोग अभी आए थे हमारे यहां बंगला के थे, उड़ीसा के थे, केरल के थे. और २५ हजार थे. और उसमें से करीब ३०-४० प्रतिशत महिलाएं थीं और कम से कम १०० महिलाएं ऐसी थीं जिनके छोटे-छोटे बच्चे थे. तो दिल्ली में सरकार ने कहा- कहां जमीन बांटेंगे? लेकिन जब २५ हजार लोगों को देखा तो रेडियो में, टेलिविजन में, अखबार में यहां कम आए, लेकिन दिल्ली में तो आना पड़ा. नहीं तो २५ हजार लोग शांति से गए और प्रधानमंत्री को मैंने यह कहा था शांति न होती तो आप सुनते नहीं. टीवी में इतना आ रहा है हर जगह आ रहा है. तो भारत सरकार ने माना अच्छा हम जमीन का बंटवारा करने का फैसला करेंगे. विनोबा जी तब ५० हजार मील चलकर गए. बहुत ज्यादा जमीन भी किसी के पास नहीं होगी और हरेक को जमीन देने की कोशिश करेंगे तो सामूहिक शक्ति अगर हो तो बगैर बन्दूक के, सरकार को भी मानना पड़ेगा. देश की एकता अगर बनना है तो सामूहिक शक्ति की जरूरत है, लेकिन दुनिया ने दो ही तरह की शक्ति को सीखा था, बन्दूक की शक्ति और सन्दूक की शक्ति. या तो मारो और नहीं तो पैसा लेकर, रिश्वत लेकर करो, अब नई शक्ति का युग हमको लाना है जिसमें न बन्दूक की शक्ति चले, न संदूक की चले. चले तो विचार की चले. और सत्य और न्याय की चले. वह प्रयास हम करेंगे तब ही राष्ट्रीय एकता टिक सकेगी.

जब मुझे जमनालाल अवॉर्ड मिला, तो मेरे भाई ने बैंगलोर से फोन किया. कहने लगे- क्या तुमको इतना बड़ा अवॉर्ड मिला पेपर में तो आता नहीं, एक दिन भी नहीं आया. मैंने कहा- भाई यह अवॉर्ड मिला है, कोई बम विस्फोट या गोलीबारी नहीं हुई है जो पेपर में आएगा. लेकिन एक बात मैं बैठने से पहले कहना चाहूंगा. दुनिया में और कहीं भी इतने मंदिर नहीं हैं और दुनिया में कहीं भी इतनी सुन्दर पौराणिक कहानियां नहीं है. कहानियां तो हर देश में हैं, लेकिन हमारे देश में इतनी सुन्दर कहानियां हैं वह सब देवताओं के साथ जुड़ी कहानियां हैं. तो इतनी सुन्दर कहानी मैंने बचपन में सुनी थी, मेरे पिताजी सुनाते थे. प्रहलाद देव भक्त, उनके पिता ईश्वर विरोधी और आखिर में खम्भे से भगवान निकल आये थे. हमारा देश मानता है इस बात को ओर हमारे देश में मंदिर-मंदिर में कितनी सुंदर मूर्तियां बनती हैं हम उनकी पूजा करते हैं बल्कि अमेरिका में ८७४ मंदिर हिन्दू, जैन, बौद्ध हैं और वहां भी यहां से बन-बन कर जाती हैं, मूर्तियां. हमारे जयपुर में तो पूरी सड़क है जहां मूर्तियां ही मूर्तियां बनती हैं संगमरमर की. बहुत खुबसूरत मूर्तियां- गणेश जी की, हनुमान जी की विष्णु है, कृष्ण है, इतनी सुन्दर-सुन्दर मूर्तियां. कितनी ही सुन्दर मूर्तियां बनी हुई हों, वे मनुष्य की बनाई हुई होती हैं. लेकिन उसकी हम पूजा करते हैं. भगवान की बनाई मूर्ति का गला काट दे और कहें मैंने बहादुरी की. दूसरे धर्म के आदमी को जीप में बैठे हुए जला दिया और कहा पानी लाओगे तो मैं बंदूक चला दूंगा. ऐसा कहकर जलाया. ओर जिसने जलाया उसको धर्मरक्षक कहते हैं. हे भगवान ऐसा धर्मरक्षक? कैसे मारने में आनंद आता है? इतनी तरक्की करने के बाद दुनियां में मनुष्य को मारने का आनंद! प्राणी को मारने में आनंद. खाली इसलिए कि वह दूसरे धर्म का है! सोचना पड़ेगा हमारे देश के लोगों को. चाहे किसी भी धर्म का हो- हिन्दू हो तो भगवान का बनाया हुआ, सिक्ख, ईसाई, पारसी, मुस्लिम सभी तो भगवान के बनाए हुए हैं, तो इसीलिए यह संदेश लोगों तक पहुंचाया जाना चाहिए- मतभेद होता है, और झगड़े भी होते हैं. आज ही मैंने पूछा कहां से झगड़ा शुरू हुआ. सांवेर में? तो बोले होटल में चाय पीते, एक आदमी की शर्ट पर चाय गिर गई तो कपड़ा गंदा हो गया. चाय पीने वाला हिन्दू और कपड़ा गंदा होने वाला मुसलमान था तो हो गया झगड़ा तीन आदमी मरे. तो झगड़ा धर्म को लेकर होता है. क्यों होता है? अंदर आग भरी हुई है और अंदर की आग भड़काने में कुछ लोगों को आनंद आता है. हम सभी का सोचना चाहिए, एक बार भड़का-भड़का कर पाकिस्तान और हिन्दुस्तान बन गया अब यह नहीं होना चाहिए. भारत सारी दुनिया के लिए आदर्श बनाना चाहिए. तो आदर्श होगा तब जब सांवेर जैसी घटना का जनम ही न हो, या कई जगह दुनिया में, कभी अलीगढ़ में हुआ, कभी कानपुर में हुआ, तो होता है ऐसा

नहीं होना चाहिए. यह तब नहीं होगा जब लोगों के मन में सभी धर्मों के प्रति आदर आ जाए.

इतना ही नहीं स्वामी विवेकानंद की दो बातें हम सब यहां से जाते-जाते याद करके जाएं. वे जब अमेरिका से लौट आए बहुत बड़ा नाम लेकर आए सैकड़ों लोग आते उनसे. एक मंडली गई उनसे मिलने. स्वामी जी ने पूछा कहां से आए? उन्होंने कहा- पंजाब से आए और आए हैं धर्म के मार्गदर्शन के लिए क्योंकि आपने धर्म का तहलका मचा दिया अमेरिका जाकर. तो हमें भी थोड़ा मार्गदर्शन दीजिए. स्वामी जी ने कहा- अरे, आप पंजाब से आए हैं. मैंने सुना वहां तीन साल से सूखा पड़ा है तो बहुत तकलीफ हो रही होगी. उन्होंने कहा हां हम तो वहां की भजन मंडली के हैं तकलीफ बहुत हो रही है लेकिन हम तो आपके पास धर्म के मार्गदर्शन के लिए आए हैं. विवेकानंद पूछते हैं- भाई, सूखा पड़ा है, तो सारे कुएं सूख गए होंगे. तो उन्होंने कहा- हां स्वामी जी कुएं तो सूख गए हैं लेकिन हम आए हैं धर्म के मार्गदर्शन के लिए. तो स्वामी कहने लगे कुएं सूख गए होंगे तो किसानों को बहुत तकलीफ हो रही होगी. तो उन्होंने कहा- हां स्वामी जी तकलीफ तो हो रही है, लेकिन हम आएं हैं धर्म के मार्गदर्शन के लिए. स्वामी जी ने कहा- भाई कुएं में पानी नहीं हैं, तो मवेशी प्यासे मर रहे होंगे, तो उन्होंने कहा- हां प्यासे मर रहे हैं लेकिन हम आए हैं धर्म के मार्गदर्शन के लिए. तो आखिर है क्या ये धर्म के मार्गदर्शन में. स्वामी ने एक बात की जब तक मेरे देश में कुत्ता भी भूखा होगा, मेरा धर्म मुझे बोलता है उस कुत्ते के लिए खाना ले जाओ. वहीं पूजा है भगवान की. तो कुत्ते में भी भगवान देखो. अगर मैं दूसरे धर्म के आदमी में भगवान नहीं देख सकता तो मैं नास्तिक हूं. मैं देखता हूं हिन्दुस्तान में कितने नास्तिक भर गए हैं, भले ही वह मंदिर जाकर कितनी ही देर घंटा बजाते हों. जीवंत मनुष्य में अगर हम भगवान को नहीं देख सकते तो नास्तिक हो गए हैं हम लोग तो आस्तिक बनें हमारे देश के लोग, सही राह पर चले, हरेक आदमी, हरेक प्राणी, हर जीव में भगवान को देखने का सोच लेंगे तो असली धर्म होगा, असली अध्यात्म होगा. ऐसे अध्यात्म के प्रचार से दुनिया में एकता बनी रह सकती है. स्वामी विवेकानंद की किताब में लिखा है हम भारतीय सभी धर्मों को सत्य मानते हैं, तो हरेक धर्म की एक विशिष्टता है इसीलिए हम आदर करेंगे यह संदेश जाना चाहिए सारे देश में हिन्दुस्तान अपने ढंग का एक राष्ट्र है इसलिए राष्ट्र को एक आदर्श राष्ट्र बनना होगा, विशाल हमारा हृदय होना चाहिए.

(ऐलान' से साभार - संपादित रूप में प्रकाशित)

(लेखक आन्तर भारती ट्रस्ट के विश्वस्त और राष्ट्रीय युवा योजना के निदेशक है.)

विशेष आलेख - ३

'सम्पूर्ण मानव जगत् की एकता' ही इस युग की सबसे बड़ी आवश्यकता है!

-डॉ. जगदीश गाँधी

पहले प्रथम विश्व युद्ध उसके बाद द्वितीय विश्व युद्ध और अब घातक शस्त्र बनाने की होड़ में विभिन्न राष्ट्रों के द्वारा तैयार ३६,००० बमों के ढेर पर बैठी हुई यह दुनियाँ धीरे-धीरे तृतीय विश्व युद्ध एवं महाविनाश की ओर बढ़ती ही जा रही है. २०वीं सदी में पहले प्रथम विश्व युद्ध, फिर द्वितीय विश्व युद्ध उसके बाद भारत-पाकिस्तान के बीच तीन युद्ध, भारत-चीन के बीच युद्ध, इजरायल-फिलिस्तीन के बीच युद्ध, उत्तरी-दक्षिण कोरिया के बीच युद्ध, इराक-ईरान के बीच युद्धों के साथ ही आज कई अन्य देशों के बीच में चल रहे युद्धों एवं विश्व के कई अन्य देशों में बढ़ती हुई गृहयुद्ध की समस्याओं के साथ ही अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद, भूख, हिंसा, बीमारी आदि का सबसे बड़ा कारण मानवजाति के हृदयों के बीच बढ़ती हुई दूरियाँ ही है.

भारत की स्वतंत्रता के साथ ही राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के सामने एक बड़ा लक्ष्य था-एशिया और अफ्रीका के समस्त देशों को दासता से मुक्ति एवं यूरोपीय साम्राज्यवाद का अंत करना. यही नहीं गाँधी जी के समक्ष संपूर्ण विश्व मानवता के लिए समता, स्वतंत्रता एवं भ्रातृत्व का लक्ष्य था. स्वतंत्रता से पूर्व १९४७ में आयोजित एशियाई संबंध परिषद् की बैठक में बापू ने समस्त विश्व-मानवता की मंगल कामना को अपना उद्देश्य बताया था. इसी कांफ्रेंस में एक संवाददाता के प्रश्न पर कि क्या वे 'विश्व सरकार'की स्थापना के पक्ष में हैं? गांधी जी ने उत्तर देते हुए कहा था कि ''यदि विश्व सरकार संभव नहीं है तो उनका जीना ही व्यर्थ है.''

इस युग के अवतार बहाउल्लाह के मूल संदेशों में प्रमुख है सम्पूर्ण मानव जगत् की एकता मानवजाति को सम्बोधित करते हुए वे कहते हैं कि- ''तुम एक ही वृक्ष के फल और एक ही शाखा की पत्तियाँ हो.'' इस कथन का अर्थ है कि मानव जगत् एक विशाल वृक्ष के समान है, विभिन्न शाखाएँ और वहाँ के निवासी इस वृक्ष की विभिन्न शाखाएँ और हर मनुष्य इन शाखाओं पर

सुशोभित फल-फूल की तरह हैं. इसलिए हमें अपने बच्चों को बचपन से ही यह शिक्षा देनी चाहिए कि ईश्वर एक है, धर्म एक है तथा सारी मानवजाति एक ही परमपिता परमात्मा की संतानें हैं. इस प्रकार 'मानवजाति की एकता' ही इस युग की सबसे बड़ी आवश्यकता है.

प्रत्येक मनुष्य की तीन वास्तविकतायें हैं. पहला, मनुष्य एक भौतिक प्राणी है. दूसरा, मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तथा तीसरा, मनुष्य एक आध्यात्मिक प्राणी है. इसलिए विश्व भर में फैली इस अनेकता को खत्म करने के लिए हमें प्रत्येक बालक को बचपन से संतुलित एवं उद्देश्यपूर्ण अर्थात् सर्वश्रेष्ठ भौतिक शिक्षा के साथ ही उन्हें मानवीय एवं आध्यात्मिक शिक्षा भी देनी चाहिए. इन तीनों प्रकार की शिक्षाओं से परिपूर्ण सम्पूर्ण व्यक्तित्व के धनी विश्व नागरिकों के द्वारा ही सारी दुनियाँ में शांति एवं एकता की स्थापना संभव है.

भौतिक शिक्षा के अन्तर्गत हमें प्रत्येक बालक को बचपन से ही कम्प्यूटर, हिन्दी, गणित, अंग्रेजी, भूगोल, विज्ञान, इतिहास आदि सभी निर्धारित विषयों का सर्वश्रेष्ठ एवं सम्पूर्ण ज्ञान कराना चाहिए. मानवीय शिक्षा के अन्तर्गत हमें विश्व के प्रत्येक बालक को सारे विश्व को सुन्दर बनाने की शिक्षा देनी चाहिए तथा आध्यात्मिक शिक्षा के अन्तर्गत हमें प्रत्येक बालक को बचपन से ही समय-समय पर एक ही परमपिता परमात्मा द्वारा भेजे गये राम, कृष्ण, बुद्ध, ईशु, मोहम्मद, गुरुनानक देव, बहाउल्लाह आदि सभी अवतारों के द्वारा दी गई ईश्वरीय शिक्षाओं यथा मर्यादा, न्याय, दया, करूणा, समता, त्याग, भाईचारा व हृदय की एकता आदि का ज्ञान देना चाहिए. भौतिक, मानवीय एवं आध्यात्मिक शिक्षा के संतुलन पर ही जीवन तथा समाज की खुशहाली की सफलता निर्भर करती है.

हमें बच्चों को बचपन से ही यह बात बतानी चाहिए कि राम, कृष्ण, बुद्ध, ईशु, मोहम्मद, गुरुनानक देव, बहाउल्लाह आदि सभी अवतार एक ही परमपिता परमात्मा की ओर से उसके दिव्य ज्ञान को देने के लिए युग-युग में इस पृथ्वी पर आयें हैं. इन अवतारों द्वारा समय-समय पर दिये गये मर्यादा, न्याय, समता, करुणा, भाईचारा, त्याग एवं हृदय की एकता आदि सभी मानवीय एवं नैतिक मूल्य हैं. भिन्न-भिन्न अवतार के माध्यम से विभिन्न स्थानों एवं भाषाओं में अवतरित ज्ञान एक ही परमपिता परमात्मा की ओर से उस युग की पीड़ाओं को समाप्त करने के लिए भेजे गये हैं. ये सभी दिव्य ज्ञान किसी जाति, धर्म एवं वर्ग व भाषा विशेष के लिए न होकर सारी मानवजाति के लिए हैं.

सारी दुनिया एक कुटुम्ब के समान है. इसलिए हमें प्रत्येक बालक को बचपन से ही यह शिक्षा देनी है कि वह इस बात का संकल्प लें कि 'एक दिन दुनिया एक करूगां, धरती स्वर्ग बनाऊगां, विश्व शांति का सपना एक दिन सच करके दिखलाऊंगा. हमें चाहिए कि हम बालकों के मन-मस्तिष्क में मानवीय जगत के प्रति संवेदनशीलता इतनी ज्यादा बढ़ा दें कि वे विश्व की सारी मानवजाति के कल्याण के लिए ही कार्य करें. इस प्रकार संतुलित एवं उद्देश्यपूर्ण शिक्षा प्राप्त बालक अपनी पेन की शक्ति का उपयोग सारे विश्व में व्याप्त समस्याओं के समाधान के लिए करेगा और सारी दुनियाँ को सुन्दर एवं सुरक्षित बनायेगा.

हमें संतुलित एवं उद्देश्यपूर्ण शिक्षा के माध्यम से अपने बच्चों के मन-मस्तिष्क में इस बात को डालना है कि परिवार का विस्तृत रूप ही 'विश्व परिवार' है और इस विश्व परिवार को एक ही परमपिता परमात्मा ने ही बनाया है. इसलिए आप अपने कार्यक्षेत्र में अपने ज्ञान के द्वारा संसार में सर्वश्रेष्ठ बनें. विश्व के सबसे महान व्यक्ति बनें. जिस भी क्षेत्र में आप जायें उस पर सबसे ऊपर रहें. सारे विश्व के डिसीजन मेकर बनें. पूरे विश्व के कल्याण को ध्यान में रखते हुए ही कोई निर्णय लें और उसे लागू करें. विश्व में एकता एवं शांति की स्थापना के लिए कार्य करें.

'हृदय की एकता' के द्वारा ही पूरे विश्व में एकता एवं शांति की स्थापना की जा सकती है. युद्ध के विचार मानव मस्तिष्क में पैदा होते हैं. इसलिए मानव मस्तिष्क में ही शान्ति के विचार डालने होंगे. मनुष्म को विचारवान बनाने की श्रेष्ठ अवस्था बचपन है. इसलिए संसार के प्रत्मेक बालक को बचपन से ही संतुलित एवं उद्देश्यपूर्ण शिक्षा देकर उसे विश्व नागरिक के रूप में विकसित करना चाहिए. वास्तव में मानव इतिहास में वह क्षण आ गया है जब शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन लाने का सशक्त माध्मम बनकर विश्व भर में हो रही उथल-पुथल का समाधान मानवजाति के हृदयों में एकता की स्थापना के द्वारा प्रस्तुत करना चाहिए. इसलिए विद्यालयों का यह सामाजिक उत्तरदायित्व है कि वे इस युग में व्याप्त अनेकता की समस्याओं की समाप्ति हेतु संतुलित एवं उद्देश्यपूर्ण शिक्षा के माध्यम से पारिवारिक एकता, समाज की एकता, देश की एकता एवं विश्व की एकता के लिए कार्य करने वाले विश्व नागरिक निर्मित करें.

संस्थापक-प्रबन्धक, सिटी मोन्टेसरी स्कूल, लखनऊ

❑

समाचार भारती-२

प्रसिद्ध लेखक श्री एन्.सुहासजी स्वामी विवेकानंद पुरस्कार से सम्मानीत

सामाजिक कार्यकर्त्ता, प्रसिद्ध लेखक श्री एन्.सुहासजी को आखिल भारतीय कला साहित्य संस्कृती अकादमी ने स्वामी विवेकानंद राष्ट्रीय पुरस्कार २०१४ देकर सन्मानित किया है.

स्वामी विवेकानंद शताब्दी वर्ष के प्रसंग में विवेकानंद जयंती के दिन, शुभ अवसर पर उन्हें ये पुरस्कार प्रदान किया है. भारत के प्रसिद्ध गायक एवं गीतकार, भजन सम्राट श्री ओमप्रकाश अग्रवाल के अध्यक्षीय समारोह के विशेष कार्यक्रम में यह पुरस्कार दिया गया.

गोवा और इतर अनेकों राज्यों में सांस्कृतिक, सामाजिक, शैक्षणिक तथा विकास प्रबोधन ऐसे कई क्षेत्रों में कार्य करने की वजह से उन्हें ये पुरस्कार प्राप्त हुआ है.

इस शानदार कार्यक्रम में डॉ.चिन्नदवार, प्रसिद्ध पत्रकार प्रा.किरण वैद्य, और उद्योगपती श्री मोहन बाबू अन्य अतिथिगणों के साथ उपस्थित थे.

श्री एन्.सुहास आंतर भारती के गोवा संघटक हैं. राष्ट्रीय सेवा दल गोवा युनिट के वह कार्यदर्शी हैं.

स्वामी विवेकानंद राष्ट्रीय पुरस्कार २०१४ सामाजिक कार्यकर्त्ता, प्रसिद्ध लेखक श्री एन्.सुहास को प्रदान करने के बाद श्री ओमप्रकाश अग्रवाल, प्रसिद्ध उद्यागपती श्री मोहनबाबू, इनके साथ डॉ.चिन्नदवार, प्रसिद्ध पत्रकार प्रा.किरण वैद्य और अन्य.

सूचना भारती -1

पू.साने गुरुजी लिखित, अनुवादित संकलित साहित्य सूचि (मराठी) भारतीय भाषाओं में अनुवाद की स्वैच्छिक सेवा प्रदाताओं की आवश्यकता है

I. उपन्यास

१. श्यामची आई
२. धडपडणारी मुले खंड १
३. श्याम
४. धडपडणारा श्याम जीवनकलह अर्थात श्याम खंड २
६. जीवनविकास अर्थात श्याम खंड ३
७. पुनर्जन्म
८. सती
९. आस्तिक
१०. क्रांती
११. गोड शेवट
१२. रामाचा शेला
१३. संध्या
१४. नवा प्रयोग
१५. चित्रकार रंगा
१६. दीनबंधू
१७. दिगंबरराव
१८. तीन मुले
१९. कालीमातेची मुले

II. कथा साहित्य

१. गोड गोष्टी भाग १
२. गोड गोष्टी भाग २
३. गोड गोष्टी भाग ३
४. गोड गोष्टी भाग ४ फुलांचा प्रयोग
५. गोष्टी ५ दुःखी
६. गोड गोष्टी - सेराव रूस्तुम व इतर गोष्टी
७. गोड गोष्टी - बेबी सरोजा
८. गोड गोष्टी - करुणादेवी
९. गोड गोष्टी - यती की पती
१०. गोड गोष्टी - चित्रा आणि चारू

III. रुचिकर कथा

१. आपण सारे भाऊ
२. गोप्या
३. दुर्दैवी
४. मिरी
५. स्वर्गीय ठेवा
६. नवजीवन

IV. अन्य कथा संग्रह

१. विश्राम
२. सोनसाखळी
३. मुलांसाठी फुले
४. अमोल गोष्टी
५. गुरुजींच्या गोष्टी भाग १
६. दारूबंदीच्या कथा
७. सुंदर कथा
८. जनी
९. श्रमणारी लक्ष्मी
१०. त्रिवेणी अर्थात शबरी
११. साक्षरतेच्या कथा
१२. कावळे
१३. मोरी गाय
१४. मेंगचियांग व इतर गोष्टी
१५. शुक्री

V. नाटिका

१. सोन्या मारुती व समाजदृश्ये
२. ते आपले घर
३. निळा पक्षी
४. अस्पृश्योद्धार
५. मंगल प्रभात

VI. कविता

१. पत्री
२. खानदेश स्तोत्र

VII. संकलित लोकसाहित्य

१. स्त्री जीवन भाग १
२. स्त्री जीवन भाग २

VIII. पत्र साहित्य

१. सुंदर पत्रे - १
२. सुंदर पत्रे - २
३. सुंदर पत्रे - ३
४. श्यामची पत्र

IX. निबंध और प्रबंध

१. भारतीय संस्कृती
२. गोड निबंध - १
३. गोड निबंध - २
४. गोड निबंध - ३
५. कर्तव्याची हाक
६. स्वातंत्र्याचा अर्थ
७. समाजवाद हा एकच मार्ग
८. भारतीय नारी
९. माझी दैवते
१०. जीवनाचे शिल्पकार
११. गीतारहस्य
१२. कुमारांपुढील कार्य

X. अनुवाद साहित्य

१. राष्ट्रधर्म
२. स्वदेश समाज
३. कला म्हणजे काय?
४. समाजधर्म
५. कल्की अथवा संस्कृतीचे भवितव्य
६. राष्ट्रीय हिंदुधर्म
७. ॲमिलची चिंतनिका
८. कुरल
९. मानवजातीची कथा
१०. दिल्ली डायरी
११. कला आणि इतर निबंध
१२. खेड्यात जाऊन काय कराल
१३. ना खंत ना खेद
१४. साधना

संकलन : डॉ.शारदा जाधव
आंतर भारती संकुल,
औराद शहा. - ४१३५२२ महाराष्ट्र.

सभी पुस्तकें निम्न वेबसाइट पर उपलब्ध हैं.

साने गुरुजी नेट पर

साने गुरुजी लिखित लगभग पूरी पुस्तकें, जो लगभग १२००० पृष्ठों की हैं, नेट पर छाप दी गई हैं. यह साइट तैय्यार की है विजन महाराष्ट्र फांऊंडेशन ने और आर्थिक सहयोग धारप असोसिएटस ने किया है. पूरा साहित्य मराठी में है. इसकी साइट -

www.saneguruji.net

संपर्क सूत्र - विजन महाराष्ट्र फाऊंडेशन, ३, वेणू अपार्टमेंट, केसरबाग, देवरुखकर रोड, शिंदेवाडी समोर, दादर (पू.), मुंबई - ४०००१४, फो. ०२२-२४१८३७१०, इमेल **thinkm2010@gmail.com**
आंतर भारती से संपर्क कर सकते हैं.

(पृष्ठ १४ से....)

अपनेआप में एक बड़ा सुधार होगा क्योंकि इस समय तो जो वृद्ध नागरिक मुख्य रूप से असंगठित क्षेत्र में हैं उनमें से १० प्रतिशत को भी १000 रुपए की मासिक पेंशन नहीं मिल रही है. उम्मीद है कि निकट भविष्य में इस बारे में कुछ महत्त्वपूर्ण उपलब्धि हासिल हो सकती है. इसके साथ विकलांगता के आधार पर दी गई पेंशन में व एकल महिलाओं को दी जाने वाली पेंशन में कुछ सुधार प्रस्तावित हैं जिनकी बहुत जरूरत है. वैसे तो वृद्ध नागरिकों की भलाई के लिए बहुपक्षीय सुधार जरूरी हैं पर फिलहाल पेंशन से सामाजिक सुरक्षा की सर्वाधिक उम्मीद बनी है. सरकार व विपक्षी दलों, केंद्र व राज्य सरकारों, अधिकारियों व सामाजिक कार्यकर्ताओं सबको आपसी सहयोग से प्रयास करने चाहिए कि निकट भविष्य में यह उम्मीद पूरी हो सके.

आंतर भारती (मासिक)

फॉर्म ४

(नियम ८ दिखिये)

1.	प्रकाशन स्थान	औराद शहाजानी - ४१३ ५२२
2.	प्रकाशन अवधि	मासिक
3.	मुद्रक का नाम	सदाविजय आर्य
	नागरिकत्व	भारतीय
	पता	औराद शहाजानी - ४१३ ५२२
4.	प्रकाशक का नाम	सदाविजय आर्य
	नागरिकत्व	भारतीय
	पता	औराद शहाजानी - ४१३ ५२२
5.	संपादक का नाम	सदाविजय आर्य
	नागरिकत्व	भारतीय
	पता	औराद शहाजानी - ४१३ ५२२
6.	उस व्यक्ति / संस्था के नाम जो समाचार–पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हो.	आन्तर भारती ट्रस्ट

मै सदाविजय आर्य एतद्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं.

१ मार्च २०१४

- सदाविजय आर्य

प्रकाशक